मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की १८ तारीख सत्संग अंक १२५ जून-२०१८

प.पू. लालजी महाराज तथा पूज्य श्रीराजा के सानिध्य में यू.के. में शिबिर

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

अधिक मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में मनाये गये अनेक उत्सव।

श्री नरनारायणदेवका पाटोत्सव

केसर स्नान

रंगमहेल अभिषेक

अक्षर-मुक्त अभिषेक

हवेली में वसंत पंचमी

समूह महापूजा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १३४
जून-२०१८

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	समैयो	०६
०४.	शरण में आया हूँ	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	२०
०८.	भक्ति सुधा	२२
०९.	सत्संग समाचार	२६

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में अधिक पुरुषोत्तम मास में पूरे वर्ष के बीच हमारे उत्सव, तिथि के अनुसार भव्य रुप से मनाया गया है। जिस में हरिभक्त यजमान बनकर अलौकिक लाभ लेकर स्वयं के जीवन को कृतार्थ करते है। अपने यहाँ प्रतिदिन समैया ही है। क्योंकि श्री नरनारायणदेव के दरबार में प्रतिदिन उत्सव कीर्तन, भक्ति श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल द्वारा होता है। अपना ओच्छव मंडल श्रीहरि के समय से अविरत चलता ही है। कभी समय निकालकर ओच्छव में बैठे, जो ओच्छव करने का आनन्द है वह प्रत्यक्ष ज्ञात होगा। साक्षात भरतखंड के राजाधिराज विराजमान हो तथा उनके सामने ऐसा उत्सव होता हो तो वह अलौकिक ही होता है। हमारे प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और परमपूज्य लालजी महाराजश्री हमारे श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल को अधिक प्रोत्साहित करते है। क्योंकि ये अपनी परम्परा और धरोहर (विरासत) है। जिसका अपने को गौरव और गरिमा है। कई हरिभक्त को जिन्हें ज्ञात नही है। जिस कारण से अपने सम्प्रदाय की ऐसी परम्परा का संरक्षण और ज्ञान कर सके।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१८)

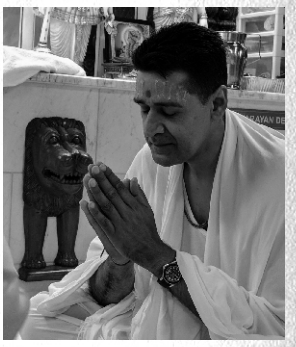

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) गामडी मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु आगमन ।

२-३ भुज (कच्छ) दहींसरा मं आगमन ।
भुज (कच्छ) प्रसादी मंदिर उद्घाटन अभिषेक के अवसर पर आगमन ।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका उद्घाटन अवसर पर आगमन ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर घुडकोट गांव में (हालार-मूली देश) कथा के अवसर पर आगमन .

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा उद्घाटन अवसर पर आगमन ।

९ खारवा (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ़ (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन ।

१२ मेडानुमुवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर उद्घाटन के अवसर पर आगमन ।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर वणझर और मोटी आदरुज उद्घाटन अवसर पर आगमन ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर संतरामपुर कथा अवसर पर आगमन ।

१८ मलमास (खरमास) के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक के कमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर हीरावाडी उद्घाटन अवसर आगमन ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेकनिकल रोड) घाटलोडिया उद्घाटन अवसर पर आगमन ।

२१ से ३० अमेरिका आई.एस.ए.ओ. के मंदिर उद्घाटन और सत्संग तथा प्रचार के लिये आगमन ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१८)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल (ता. कडी) उद्घाटन अवसर पर आगमन ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन ।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) उद्घाटन अवसर पर आगमन ।

१८ खलमास (खरमास) के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक के करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरुज कथा अवसर पर आगमन ।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुनावाडा पर आगमन ।

२३ खरमास के अवसर पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर अक्षर भुवन श्री घनश्याम महाराज के षोडसोपचार अभिषेक स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२४-२९ यु.के. धर्म प्रवास

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर स्टेनमोर और विल्सडन पर आगमन ।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर स्टेधाम और हेरो पर आगमन ।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईस्ट लंदन और वुलवीच पर आगमन ।

समैया

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

एकबार श्रीजी महाराज वडताल में प्रबोधिनी के विषय में समैया करने के लिये आये । देश-देश के हरिभक्त और संतवर्णी पार्षद आदि आये थे । उस सभा में उपदेश देते हुए श्रीहरि बोले कि ''सभी संत मंडल ब्रह्मचारी सांख्ययोगी, हरिभक्त भाई-बहन अप सुने । हमने दो समैया को निश्चित किया है । उसमे एक कार्ति सुद एकादशी प्रबोधनी कही जाती है तथा दूसरा चैत्र सुद नवमी रामनवमी के दिन सभी हरिभक्त आये । यह समैया शायद अहमदाबाद नरनारायण मंदिर में होगा या तो वडताल गाँव के लक्ष्मीनारायण मंदिर में करेंगे । इसलिए आप सभी बिना कहे आईयेगा निमंत्रण नही भेजा जायेगा । ऐसी हमारी आप सभी को आज्ञा है । तत्पश्चात दूसरे दिन श्रीहरिने कहा कि प्रत्येक पूनम को हरिभक्त सत्संगी आप लोग लक्ष्मीनारायण-नरनारायण का दर्शन करने आये । और जो भाई-बहन इस नियम का पालन करेगे वह अन्न और वस्त्र के लिए दुःखी नही होगे । इस लिए जिसे पूनम का नियम रखना हो वो लोग बोले । उस समय कई हरिभक्त भाई-बहन नियम रखने के लिए बोले । तब श्रीजी महाराज खुश होकर कहे जिसके देश में शिखरयुक्त मंदिर हो वहाँ पर उसे दर्शन हेतु जाना चाहिए । और जहाँ-जहाँ पर मंदिर बने है तथा बाद में बनेगे । तथा जो जो मूर्तिया होगी उनका दर्शन करने के लिए पूनम-पूनम पर जाना हमारी आज्ञा है । (स्वामिनारायण विचरण लीलामृत में) प्रसादानंद स्वामी ने इस बात को लिखे है ।

वचनामृत ग.प्र.-३ में श्रीजी महाराज ने कहा है कि इसके लिए हम लोग बड़े-बड़े विष्णुयज्ञ करते है तथा जन्माष्टमी और एकादशी आदि व्रत का प्रत्येक वर्ष उत्सव करते है . उसमें ब्रह्मचारी, साधु, सत्संगी को इकट्ठा करते है । और यदि कोई पापी जीव होता है यदि उसे अन्तिम समय में याद आ जाये तो उसे भगवान के धाम की प्राप्ति होती है । जैसा कि शिक्षापत्री श्लोक संख्या-१५६ में कहा गया है कि धनवान गृहस्थ सत्संगी उसे भगवान के मंदिर में बड़े-बड़े उत्सव करना तथा अच्छे ब्राह्मण को अनेक प्रकार का दान देना चाहिए ।

ऋतु, मास, तिथि, व्रत के अनुष्ठान नित्य, नियम से अवसर पर षोडशोपचार पूजन और वाद्य यंत्रो युक्त भजन-कीर्तन करने को उत्सव कहते है । और जिस

अवसर पर, नित्य, नियम से पूजन-हवन-कथा, कीर्तन, व्रत, दान, भोजन, दर्शन का प्रबन्धहो तथा उसमे धर्मकुल, ब्रह्मचारी, साधु, पाला, सत्संगी भाई-बहन आये उसे समैया कहते है।

श्रीहरि प्रबोधिनी - फूलडोल, वसंत पंचमी, रामनवमी - जन्माष्टमी, अन्नकूट जैसे बडे-बडे समैया को करके उसमें सभी हरिभक्तो और संतो को बुलाना। हमारी सम्प्रदाय के संस्कृत - प्राकृत, काव्य, इतिहास वार्ता ग्रन्थो का अवलोकन करे तो तीन भाग में मात्र उत्सव समैया का वर्णन है। श्रीहरि समकालीन और बाद के समय में उत्सव, समैया, में अनंत जीव भगवान के योग मे आये तथा वे खूब प्रचलित हो गये। जिस कारण से पात्र-कुपात्र जीवन भगवान के शरण में आये। श्रीजी महाराजने संसार के पापी जीव को मात्र सत्संग में जन्म हो ऐसी भावना से सद्गुरु मुक्तानंद स्वामी को मंडल सहित बौठा जैसे अनेक मेले में भेजे थे। श्रीहरि कहते थे संत मेला में वृक्ष के नीचे बेंठना। आप का कोई दर्शन करेगा तो स्वामिनारायण का साधु बैठा है, ऐसा भी कहेगा तो उसका पाप क्षय होगा तथा सत्संग में नया जन्म होगा।

उत्सव में आमंत्रित आते है और समैया में सभी कोई आते है। महाराज के समय में यदि समैया में बुलाया गया हो न आये, तथा रोकने पर रुके नही तो श्रीहरि नाराज होते थे। ऐसे हरिभक्तो की स्थिति खराब हो जाती थी। भक्तो के देह-गेह और धन रक्षा हेतु कई लोग घर वखरी लेकर समैया में आते थे। इसी प्रकार किसी से धन माँगकर खूब खुश होना तथा कपट रखने पर क्रोधित हो जाते थे। जिस में सभी साधन समावेश हो उसे समैया कहते है। समैया में आये हुए सत्संगी-संतो के व्यवहार की जानकारी लेते। किसी पर खुश होकर अर्त्तमन से आशीर्वाद देते थे।

आज भी समैया में महाराज के नूरहने पर भी आनंद प्राप्त होता है। श्रीहरि धर्मकुल स्वरुप में समैया में दर्शन देकर भक्तो की भावना को स्वीकार करते है। ऐसे तो दिव्य स्वरुप में महाराज समैया में विचरण करते है। हरिभक्त घर से आये तथा घर वापस जाये तब-तक भगवान साथ ही रहते है। तथा दिव्य रुप में भक्तो की रक्षा करते है। प्रत्येक का साथ देते है। भगवान साधु मंडल में साधु बनकर रहते है। हरिभक्त के साथ हरिभक्त, भाईके साथ भाई, बहनो के साथ बहन, युवको के साथ युवक, वृद्धो के साथ वृद्ध, श्रोता के साथ श्रोता सेवा करने वालो के साथ सेवक भोजन करते समय भोजन के पंगत में, गाने वालो में गायक, भजन मे भजनकर्ता, पिरसने वाले के साथ पिरसने वाला, सफाई की जगह पर सफाईदार, दाताओ के साथ दाता, सन्मान प्राप्त करने वाले के साथ सन्मान लेना, रसोईया में रसोईया वाले अन्नकम पडे तो लाने वाले, पूजा स्वीकार तथा पूजा भी करना, गंदे वर्तन की सफाई में भी, तथा दुष्टमति वाले को डराकर बाहर निकालना, ज्ञानवार्ता में ज्ञान लेना तथा ग्रामवार्ता से दूर हो जाना। श्रीहरि के साथ मुक्तो एवं देव भी मनुष्य रुप में सेवा देते है।

जैसे जासूस व्यक्ति को पहचानना कठिन है। उसी प्रकार समैया में श्रीहरि को जान नहीं सकते लेकिन मिल सकते है। ''ज्यां हो यमेळो त्या स्वामिनारायण भेलो'' ऐसे सत्संग की कहावत भी है। लेकिन संतो-भक्तो की भीड में भगवान का दर्शन नही होता है श्रीजी महाराज के एश्वर्य का दर्शन तो समैया में होता है। जब कि उत्सव समैया में भगवान के भक्त को तन, मन, धन से सेवा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इस सेवा को सीधे स्वीकार करते है। उत्सव की शोभा रचना ऋंगार की भव्यता कै साथ आकर्षण से जीव आते है जिससे करोडो जन्म के पाप मिट जाते है। वह व्यक्ति यदि दूसरे के सामने समैया का वर्णन करता है तो सामने वाले का पाप क्षय हो जाता है। समैया का भोजन राजशाही जैसा होता है उस स्वाद का ज्ञान करने से कल्याण हो जाता है। किसी प्रकार से महाराज का गुण आये तो भवबंधन से व्यक्ति मुक्त हो जाता है।

श्रीहरि के समय में महाराज से मिलने की जगह समैया थी। संत-हरिभक्त समैया का रास्ता देखते थे। अब कहाँ समैया हो और शीघ्र दर्शन हो। जो जीव समैया की प्रसंशा करता है उसे भगवान अंत समय लेने भी आते है।

श्रीजी महाराज के समय में महाराज को संतो हरिभक्तो से मिलना हो तो भक्त समैया में आते थे।

शरण में आया हूँ

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

स्वामिनारायणदेवं शरणं व्रजामि । शरणं ॥ ध्रुवपदम् ॥
भक्तिधर्मसुप्रियतमबालम् । मायाकालमहाविकरालम् ।
सदाश्वेताम्बरशालं भवन्तं भजामि ॥ शरणं...॥१॥
सकलशास्त्रनिगमागमसारम् । वर्णिवेषरमणीयमुदारम् ।
शरणागतपातकहारम् शरणाम्यम नमामि ॥ शरणं...॥२॥
कोटिमदनमोहनसुखरुपम् । सुरनरवरमुनिवरभूपम् ।
जानसुधारसकूपम् सततं स्मरामि ॥ शरणं...॥३॥
ब्रह्मरुपमुनिवन्दितपादम् । संहृतसंश्रितसर्वविषादम् ।
वादिजनखण्डिवादम् प्रपन्नोभवामि ॥ शरणं...॥४॥
हित्वा राजसतामसदेवम् कार्य हरिपदशरणमित्येवम् ।
निष्कामानन्दजनोऽहं शतशो वदामि ॥ शरणं...॥५॥
॥ निष्कामानन्दवर्णिविरचितं शरणस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अपने इस उद्धव संप्रदाय में अर्थात् भगवान श्री स्वामिनारायण के द्वारा स्वयं प्रवर्तित श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में श्रीहरि के समय में उनके प्रत्यक्ष प्रमाण में विचरण करते मनुष्याकृति स्वरुप की उपासना और भक्ति हजारो लाखो भक्त करने लगे थे । इस में विद्वान-महापुरुष, संत महात्मा और कवियो संगीतकारो के साथ-साथ राजा महाराजा भी उनके प्रत्यक्ष दर्शन और नाम का जप करते थे । तथा प्रार्थना करते थे । तथा शरण में आते थे । वे शरणागत भक्तो संतो और कवियो तथा अन्य लोको को कैसे शरणागत होता हो । तो कहाँ हो सही, और सत्य, मार्गदर्शन लोगो को देते थे । उसे प्राकृत भाषा के कवि छन्द-दोहा चौपाईऔर कीर्तन के पदो की रचना करके जागरण लाते थे । उसी प्रकार विद्वानो के समुदाय में संस्कृत

भाषा केग्रन्थ श्लोक और अष्टको की रचना करके तथा स्वयं के अनुभवो को बताते थे । तथा उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते थे । ऐसी ही एक प्रेरणादायक अष्टक की रचना निष्ठामानन्दवर्णी है । जो जीव मात्र को शरण स्वीकारने जैसे एक मात्र देव भगवान श्री स्वामिनारायण ही है । इसको समझने के लिए उन्होने जिस संस्कृत शब्दो का प्रयोग किये है उसे समझने का प्रयास करें ।

स्वामिनारायणदेवं शरणं व्रजामि । शरणं ॥ ध्रुवपदम् ॥
भक्तिधर्मसुप्रियतमबालम् । मायाकालमहाविकरालम् ।
सदाश्वेताम्बरशालं भवन्तं भजामि ॥ शरणं...॥१॥

इस संसार मे जिस जीवात्मा को मनुष्य का शरीर परमेश्वर की कृपा से मिली है, वह देवताओ को मिलना भी कठिन है । ऐसे मूल्यवान देह की प्राप्त होने पर स्वयं के जीवात्मा का श्रेय अर्थात् अन्तिम कल्याण रुप मोक्ष प्राप्त कर लेना यही मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ मानव मात्र का कर्तव्य है । उस कर्तव्य को पूरा करने के लिए सतयुग में मुनी लोग मौन धारण करके तपस्या करके अपने मनोरथको पूर्ण करते ते । त्रेतायुग में बड़े बड़े यज्ञ करके स्वइच्छित फल प्राप्त करते थे । द्वापर युग में वैदिक मंत्रो का जप करके मोक्षरुपी सिद्धि प्राप्त करते थे । लेकिन इस भयानक कलियुग में मनुष्य के पास ऐसा तप, यज्ञ, और जप कर सके ऐसी शक्ति नहीं रही । जब स्वयं के पास शक्ति हो तो ऐसे समर्थ अक्षय को खोजकर स्वयं की जीवात्मा को मोक्ष दे सके । ऐसे समर्थ एवम् योग्य मात्र एक परमब्रह्म परमेश्वर परमात्मा भगवान श्री पुरुषोत्तम नारायण के अलावा इस अनंत कोटि ब्रह्मांडो के नियंता और स्वामी है । इस लिए स्वयं को दिव्य षडाक्षरी महामंत्र इस युग को दिये है । स्वामी अर्थात् मालिक, नियंता राजाधिराज, जैसे कि संसार में कोई एक गाँव या खेत या मकान होता है । ऐसे ही अनन्त कोटी ब्रह्मांडो के मालिक अधिपति नियन्ता है वे नारायण है वैसे स्वामिनारायण ऐसे शास्त्रीय नाम से परमेश्वर का स्मरण किया जाता है । मेरे परमात्मा ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण मैं आप के शरण में हूँ । क्योकि शरण कोई स्वीकार करता है तो वह मात्र आप श्री स्वामिनारायण देव अर्थात् आप भगवान है । इसलिए मैं आज्ञा की शरण में नम्रतापूर्वक आकर नमस्कार करता हूँ । मेरा स्वीकार करें ।(१)

सकलशास्त्रनिगमागमसारम् । वर्णिवेषरमणीयमुदारम् ।
शरणागतपातकहारम् शरणम्यम नमामि ॥ शरणं...॥२॥

संसार के प्रसिद्ध सभी शास्त्रो का सार ये है और निगम शास्त्र वेद जिसे अपौरुषेय कहते है, अर्थात जिसकी रचना ये लेखन किसी पुरुष से नही किया है । लेकिन समाधिमें गये सिद्धयोगियों की परस्पर दिव्यवाणी सुनकर समाधिमें से जागृत होकर अपने शिष्य के समुदाय को समाधिका अनुभव कहे है । वाणी अर्थात् वेद की श्रुति का सार और बड़े-बड़े समाधिनिष्ठ विद्वानो ने जो गूढ रहस्य समझा है वे संसार को बताने का प्रयत्न किये है । इस सभी का सार एक है कि बटुक वर्णी जैसा वेष धारण करके उदारतापूर्वक संसार के जीव प्राणी मात्र मोक्ष रुपी महान हित के लिए बद्रिका आश्रम धाम में तप करते हुए आप के शरण में अधम से अधम, पापी से पापी जीव आये उसके सभी पापो को नाश करके उसे मोक्ष के मार्ग की तरफ अग्रसर करते है । इस कारण से यदि कोई शरण स्वीकारने योग्य कोई है तो केवल मात्र आप ही श्री स्वामिनारायण देव अर्थात् भगवान है । मैं आप की शरण में नम्रता पूर्वक आकर प्रणाम करता हूँ । मेरा प्रणाम स्वीकार करे ।(२)

कोटिमदनमोहनसुखरुपम् । सुरनरवरमुनिवरभूपम् ।
जानसुधारसकूपम् सततं स्मरामि ॥ शरणं...॥३॥

इस जगत में मनुष्य रुप धारण करके प्रगट हुए है । आप का मानव शरीर कितना सुंदर है जो करोडो कामदेवो के रुप को मिलाकर एक करे तो भी आप का रुप उसको धुमिल कर देता है । ऐसे रुपवान और सुख

रुप आप का है। साधारण मनुष्य की शरीर रुपवान तो होती है। तो उसमें दुखदायक रोग का दर्द-वृद्धावस्था और मृत्यु आती है। इसका कोई निश्चय नही है। जो अपने में कभी सम्भव नही है। इस कारण से बडे से बड़े देवाधिपति, इन्द्रादि, मनुष्याधिपति, राजा महाराण और मौन धारण करके वन में तपस्या करने वाले मुनियो में अति श्रेष्ठ मुनि भी इस रुप को सदैव स्मरण करते है। आप के दिव्य मुख कमल में से प्रवाहित हुए अमृत जैसे ज्ञान के प्रवाह में न खत्म होने वाला मीठे जल का कुआ हो उसमें से लगातार प्रवाह बहता हो ऐसे ही वचनामृत का ज्ञान अविरत प्रवाहित होता है। उसका सदैव में स्मरण करता हूँ। इस कारण से किसी की शरणागति स्वीकार करने योग्य है तो मात्र आप की है। श्री स्वामिनारायणदेव अर्थात् भगवान है। इसलिए मैं आप की शरण में नम्रता पूर्वक आकर नमस्कार करता हूँ। मेरा स्वीकार करे।(३)

ब्रह्मरुपमुनिवन्दितपादम्। संहृतसंश्रितसर्वविषादम्।
वादिजनखण्डिवादम् प्रपन्नोभवामि ॥ शरणं...॥४॥

स्थूल, सूक्ष्म और कारण इस तीन शरीर से अपनी आत्मा को अलग करके सदैव ब्रह्म स्थिति में निमग्न रहने वाले ब्रह्मरुप मुनियो का मंडल भी आप के चरण की सदैव वंदना करते है। इस भयानक कलिकाल में जो आप की शरण में आते है उसमें सभी प्रकार के मन में संशयो को और जन्म-मृत्यु के दुख के भय का जो विषाद भरा है उसका तत्काल नाश करते है। आप के पास शास्त्र का वाद-विवाद करने के लिए कोई पंडित या संसार का साधारण मनुष्य आये उसके सभी विवादो का खंडन करके सत्य बात को समझाते है। यह देखकर विचारकर समझकर आप के शरण में हूँ। कारण शरणागति स्वीकारने योग्य कोई है तो केवल आप श्री स्वामिनारायण देव अर्थात भगवान है। इस कारण से नम्रतापूर्वक आकर प्रणाम करता हूँ यह मेरा स्वीकार करे।(४)

हित्वा राजसतामसदेवम् कार्य हरिपदशरणमित्येवम्।
निष्कामानन्दजनोऽहं शतशो वदामि ॥ शरणं...॥५॥

संसार में राजसी ईच्छाओ को पूर्ण करने वाले देवता, जैसे कि किसी की धन-सम्पत्ति, पुत्र देने वाले स्थान और तामसी कामना को पूर्ण करते स्थान, किसी को शत्रु के उपर विजय, शत्रु का नाश, विषय भोजन को देने वाले स्थानो का त्याग करके विचारशील समझदार ज्ञानी मनुष्य को केवल भगवान श्रीहरि के शरण को स्वीकार करना चाहिए ऐसा बुद्धिमान मनुष्यो का कहना है। इस कारण से में निष्कामनंद वर्णी जगत के जीव मात्र के लिए कहते है कि जिसके हृदय में जगत की कोई कामना नहीं ऐसी निष्कामी मनुष्य को तो भगवान श्री स्वामिनारायण के शरण में आकर सैकडो बार वंदना करना चाहिए। क्योकि शरण स्वीकारने योग्य है। तो कोई वह मात्र आप श्री स्वामिनारायण देव अर्तात् भगवान है। इस कारण से नम्रतापूर्वक आप की शरण में आकर प्रणाम करता हूँ। इसे स्वीकार करे। (६)

हरिभक्तो को सूचना

सभी हरिभक्तो को विशेष रुप से सूचित किया जा रहा है कि आप के घर में अपने सम्प्रदाय में उत्सव-समैया के समय पर श्रीहरि की मूर्तियाँ, पुस्तके कभी-कभी भेट स्वरुप मिलती है। जिसके बारे में आप सोचते होगे कि इसका उपयोग कैसे हो। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की विशेष सूचना है कि आप के पास सम्प्रदाय की अतिरिक्त सभी मूर्ति, फोटो, पुस्तक आदि अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय में दे दे। पुनः इसका रिसायकलिंग प्रोसेस करके अन्य नये मुमुक्षुओ को भेट दीजा सके। मो.नं.: ९०९९०९८९६९

आज्ञा से,
महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ (ओस्ट्रेलिया) पाँचवा पाटोत्सव अवसर : साढे आठ बजा है । अक्षर प्रकाश स्वामीने हमसे कहे की बधार अन्त में रखे । जल्दी बघार करने से उसकी महक से भूख लगने लगती है । आप सभी से मिलकर खुशी हुई । इस अवसर पर दो बात संक्षिप्त में कहेगे । पहली बात, हमारे युवको ने स्थानीय कम्यूनिटी में जिस **Food Drive** की प्रवृत्ति किये है, इसके लिये उनको जो विचार आया तथा प्रेरित हुई आवश्यक है । इससे सर्व प्रथम तो यहां के स्थानीय कम्यूनीटि में अपनी संस्था की **Equity** बढेगी और दूसरा महाराजजी अपने को सिखाये है । मानवता कभी भूलना नही चाहिए । अनाथ आश्रम के लिए की लोगो की जिज्ञासा थी । उसके लिये यह विषयथी प्रभावी होता है ।

लंगाटा इसके पहले जब आये थे । वहाँ पर हमारी बैग छूट गई । सभा में हम कामन ड्रेस में आये थे । महंत स्वामी और दूसरे संत बोले, ऐसा कैसे ? हम बोले, बैग न आये तो इसमें हम क्या करे ? उस एअर लाइन का नाम नही बताना है । दूसरी बार ऐसा अनुभव होने के बाद तब से प्रतिज्ञा कर लिय मुफ्त का टिकट क्या जिंदगी में कभी पैर नही रखेगे । एक जोडी कपडा कुर्ता-धोती पहने थे । साथ में दो भक्त पार्षद भी थे । परिस्थिति ऐसी बनी कि सुबह की सभा पूर्ण हुई तथा दोपहर मे इन्ही कपडो को धुलना सुखाना और इस्ती करना था । भगवान की कृपा से वहाँ ठंडक भी थी । लेकिन वहाँ पर एक समय में इतनी ठंडक नही रहती है । तब भी हम लोग बोले थे । आज भी कह रहे है कि जिसके पास एक जोडी कपडा हो ध्यान देगे । जिसके पास है अधिक है । दान में थे । भगवानने दिया है तो स्वयं प्रयोग हेतु मनाई नहीं है लेकिन ये कभी मत भूलिये की संसार में कई मनुष्य ऐसे है जिन्हे वास्तव में आवश्यकता है । तो जिन युवकोने इस **Food Dirve** का संकल्प किया उनका हम सभी साथ दे और तालियो से मनोबल बढाये ।

कल बिनु घडी दे गया था । हमने देखा सेकेन्ड की सूई नही चल रही थी । घडी में सेल कहा है ? हमको तो घडी समय बताये यह महत्वपूर्ण है । घडी समय के कारण अच्छी लगती है । सौख है । घडी की कीमत और ब्रांड से नही वह समय बताने में मूल्यवान है । घडी की एक सेकेन्ड की सूई चलती है उससे ज्ञात होता है कि जीवन का प्रतिपल कम होता जा रहा है । तो बिनु तुम घडी दिखाने के लिए लाया है । सेल तो लगा । (हास्य).... बैटरी अर्थात् .... कैसी बेटरी ? हमारे पास कहाँ बैटरी है ? हमारे बैटरी का पावर वहाँ से (श्रीहरि के पास) से आता है । ये सब स्वचालित है । सत्य कहे ! अभी भगतने कहा, महाराजश्री की आज्ञा में रहिए । कृपया हमारी आज्ञा कोई अलग से नही है । भगवान की आज्ञा में रहना अर्थात् सब कुछ आ गया । बहुत अपनेपन

से कहता हूँ। महाराजजीने २१२ श्लोक लिखा। उस में हम कितना पालन कर रहे है ? महाराज कहे है कि हमारे बचन में रहना सुखी रहोगे। हमारी वाणी ही हमारा स्वरुप है। यदि आज्ञा में रहेगे तो कभी अन्न, धन, वस्त्र तथा सम्मान से दुःखी नही होने देगे। इतना ही नही बड़े सुख भी मिलेगे हमारी बुद्धि सीमित है। कई लोगो को ऐसा लगता है हम सोफा पर बैठते है। ये वक्ता संत व्यास पीठ पर बैठा है इसमें अधिक सुख है। यह तो हमारे आन्तरिक अनुभव की बात है कि व्यास पीठ पर बैठना कितनी तपस्या है। कितने सुझाव आते है। ऐसा होना चाहिए ! हाँ भाई ! सब हो जायेगा।

हमारा व्यक्तिगत एजेन्डा कुछ नही है। एक ही एजेन्डा कि भगवान खुश हो। और अपना परिवार मिलकर रहे। हम और विशेष मेहमान हरिभक्त बैठे थे। तभी हम लोगो ने बात की हमारा प्रबन्धसे कुछ लेना देना नही है। तथा किसी वस्तु से भी नही। हमारा सिद्धान्त से लेन-देन है। हम भगवान के होकर रहे तथा देव से मिलकर रहे। २२-२४ वर्ष से यहाँ आते है। उस समय एक भारतीय ही मिल जाय तो भगवान मिले ऐसा लगता था। आज तो यहाँ कितने मंदिर बन गये है। तो हमें इसका कितना गर्व होता है। इन मंदिरो की रोशनी अपनी एकता की रोशनी है। महाराज कहे है कि भगवान और भगवान के भक्तो के अवगुण कौन ग्रहण करे। तो भक्तो को भगवान के साथ क्यो जोडे होगे ? इसके लिए संतो ने बहुत कहा है इस लिये अधिक नही कहते है। लेकिन सत्य यह है कि अपने फूट पट्टी से अन्य भक्त को माप नही सकते है। हम आप को उपदेश नही दे रहे है हमारी खुद की फुट पट्टी छोटी है। एक वर्ष में हम मात्र तीन दिन पर्थ में रहते है। तो आप के यहाँ का क्या **Rule - Regulations** और सरकार के क्या निमय है कैसे पता चलेगा ? कहाँ से जलनिकास कहाँ पर प्लम्बिग करना है हम सलाह देते क्या हमारी सलाह काम आयेगी ? इस आप स्वयं जज है। हमारी एक ही सलाह है कि हम सब देव को (श्रीजी महाराज द्वारा पधरावेला श्री नरनारायणदेव से जुडे रहे और आपस में प्रेम बना रहे। किसी का स्वभाव हमेशा समान नही होता है। किसी का स्वभाव अच्छा लगता है, किसीका नही, इस सब को छोडकर उसके अंदर स्थित भगवान जो है। वह दृष्टि में रखकर उसके सामने हाथ जोड़कर जय स्वामिनारायण कहते है। ये भी एक अपनी मर्यादा है। तरीका, परम्परा है। कुछ लोग दुखी होते है उनकी जय स्वामिनारायण बोलने की मुख-मुद्रा बदल जाती है। तिरस्कार से भरा) ऐसा नही करना चाहिए। अपने पद्धति प्रमाण से आदर युक्त भाव से जय स्वामिनारायण कहे तो भगवान को भी अच्छा लगता है। कारण यह है कि किसी के जीवन में कितनी भजन, कितनी भक्ति, निष्ठा है उसका निर्णय हम किस तरीके से कर सकते है ? किसी के जीवन में देवता के प्रति, हरिभक्त के प्रति अपनी संस्था के प्रति कितना अपनापन है उसकी माप शक्ति अपने पास नही है। इस कारण से दूसरे के अवगुण अभाव कोन लेते हुए हाथ जोड कर वंदन करना चाहिए।

वर्तमान समय में थोडी विचार शैली बदल गयी है। खुटने का जय स्वामिनारायण खराब लगता है। बड़े संत हो और कंधे के पास खडे होकर जय स्वामिनारायण कहे तो कैसा लगात है ? मात्र संत ही नही हम ही धोखा देते है। यदि नही जा सकते है तो दूर से भी नमस्कार किया जा सकता है। कृपा करके पैर छूना है तो पैर ही छुए लेकिन कंधे पर हाथ न रखे। संत की एक कक्षा होती है ? हरिभक्त की भी एक कक्षा होती है। कोई हरिभक्त छोटा नहीं जहाँ तक भगवान का आदर है वही पर साथ ही साथ भक्त का आदर करना सिखना चाहिए। सिखना पडेगा और सिखना ही पडेगा। यदि भक्त का आदर करना नही सिखेगे तो मंदिर की सीढीयाँ घिस डालो, माला फेरफेर के चूर्ण कर दो तो भी कोई असर नही होगा। आपसी प्रेम-आदर से सम्प्रदाय की नीव है। हेत और प्रेम बस लोग अपने से जुडते है।

संत भगवान की कथा कहते है। उसका समैया होता है। इसका सार सोचियेगा। प्रत्येक आयोजन में

लगभग सभी को खिलाया जाता है। किस लिए ? किसी को मारने के लिये य न खाने वाले का उद्देश्य है इस लिये खिलाया जाता है। अर्थात् हेतं और प्रेम के सिवाय दूसरा मार्ग नहीं है।

जब आते है तब यह नही पीढ़ी (छोटे-बच्चे) खडे रहते है। पहले के बड़े हो गये है इस लिए विस्तार भी दिखाई देता है। और विकास मे भी अपनी उन्नति है। मंदिर की नींव के पहले से, हम आते है। आप लोगो की उन्नति प्रगति देखकर अन्दर से खुशी होती है। इतना तो निश्चित है इस उन्नति के पीछ कोई पावर है तो भगवान है।

आफिस में गौमुखी शोभा नही देती है। विवेक-बुद्धि चाहिए । आफिस ए **Administration** (व्यवस्था प्रशासन) के लिये होती है । **Administration, Katha is Katha** (कथा ये कथा है अर्थात् कथा के समय कथा ही) और मंदिर में भगवान के समक्ष गौमुखी **then it is Beautiful** (सुंदर) नाम स्मरण भूलना हम नही कहते है। शुभ कार्य, या अशुभ कार्य प्रत्येक कार्य में भगवान को मत भूलिए। इसका मतलब यह नही है कि गौमुखी में हाथ रखकर **go to the Bathroom** (बाथरुम में जाना) आधार में बुद्धि और विवेक की आवश्यकात है। भगवान का बाथरुम इस तरह याद कर सकते है कि भगवान ने डिटाँल बनाया है। भगवान के द्वारा दिए गये सेल के पावर से कूप्पी में डिटाल स्वयं बाहर आता है। भगवान की कृपा एवम् आदेश के' बिना साबुन भी हाथ में नही आ सकता है ! ऐसा मानिए यह भगवान को याद करने पैर ऐसा होता है। सभी वस्तुओ में भगवान को भूलना नही है। लेकिन इस में भी बुद्धि-विवेक चाहिए। यह मेरा व्यक्तिगत मत है। प्रत्येक बात सामान्यत: कहते है ही कोई अपने सिर पर न ले। जिसको माला फेरना हो माला फेरे भजन करे, जितनी माला उतनी पंचायत कम होगी। दंडवत करे, प्रदक्षिणा करे, माला करे। जो आप का अवसर हो उस हिसाब से भजन भक्ति करे। भगवान खुश होगे। हमने यहाँ पर बच्चियों को हार बनाते देखा है। ठाकुरजी के लिये हो या हरिभक्तो के लिये ये सामान्य बात नहीं है। यह लाईट, मंडप डेकोरेशन, तैयार कनरे के लिए **concep** (विचार-कल्पना-आईडिया) होनी चाहिए। आगे बढ़ने में प्रत्येक की मेहनत होती है। कमेटी सदस्य ट्रस्टीओ, संतो, यहाँ के भक्तो बाहर से आये भक्तो का प्रभाव है। और यह प्रभाव भगवान के लिये किया गया है। इन बहनो का अधिक सपोर्ट है। उनके सपोर्ट के बिना कुछ सम्भव नही था। **othey have powers they have efficiency** (उनके पास शक्ति है। संतुलन की क्षमता है। श्री राजाजी, लालजी महाराज का **Exam** था तो गादीवाले घर पर है इस कारण से हम लोग आ सके और आप से मिल सके।

नव बजने आया है। स्वामी दो रसोई मे मुझे ले गये। जिस में बैगन की डबल वधार की सुगंधनाक में भर गयी है। अर्थात् भूख भी डबल लग गयी है। क्योकि गये कल एकादशी थी। और दोपहर में हम खाते नहीं है। आप को भी छुट्टी दे रहा हूँ। सरस प्रसाद है। खाईयेगा। खाते वक्त याद करियेगा कि प्रसाद देने वाले, पचाने वाले भगवान है। कई बार अधिक मिल जाने पर अधिक लेकिन उसे पचाने के लिये गोली खानी पडती है। खाने से पहले और खाने के बाद भी गोली लेना पडता है। हम सब भाग्यशाली है कि भाग्य में न हो तो भी महाराजजी अपने को दो वक्त की रोटी से अधिक दिये है। हम तो मानते है कि भगवान के कारण ही सब कुछ मिला है। नही तो रोटी क्या ? साँस भी लेना सम्भव नही है। इस लिये खाते समय पूरे समय नही तो शुरु मध्य और अंत में यह विचार आता है कि भगवान की कृपा से रोटी का निवला अंदर जाता है। ऐसा माने तो अपना भोजन करना सफल है।

अंत में श्री नरनारायणदेव के चरणो के प्रार्थना के साथ सभी को शुभ-आशीर्वाद प्रदान किये।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

माणकी घोडी का श्रृंगार

जिसके पीठ पर बैठकर सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण गाँव-गाँव टहलते थे। उस माणकी घोडी का श्रृंगार श्री स्वामिनारायण म्यूजियम होल नं.-३ में रखा गया है।

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીનો યુ.કે. સત્સંગ પ્રવાસ

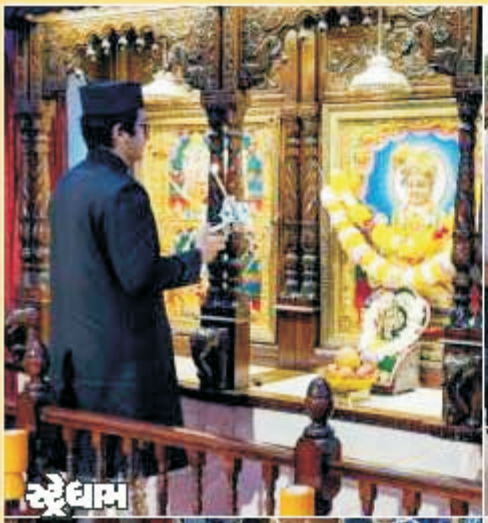
સ્ટ્રેધામ

ઈસ્ટ લંડન

કેન્ટોન

સ્ટેનમોર

વુલ્વીચ

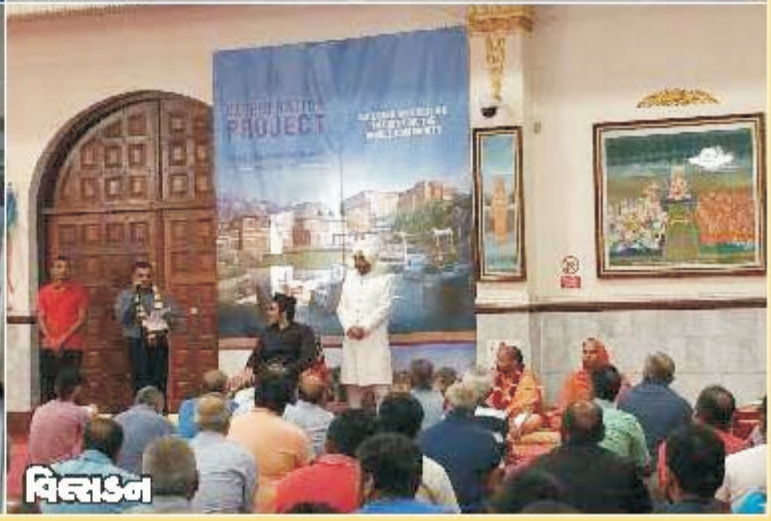

વિલ્સડન

૧. ગાંધીનગર સેક્ટર-૨માં અધિકમાસ નિમિત્તે કથા શ્રવણ કરતા હરિભક્તો. ૨.મહાદેવનગર મંદિરના ૨૩ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.૩. ગાંધીનગર સેક્ટર-૨ મંદિર દ્વારા હરિદ્વારમાં શ્રીમદ્ ભાગવત કથા.૩. ગાંધીનગર સેક્ટર-૨ મંદિર દ્વારા કુડાસણ ગામે સત્સંગ સભા.૫. કચ્છ સીમા પર આવેલ બેડિયાબેટ હનુમાનજી મંદિરનું ખાત મુહૂર્ત કરતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી, માનનીય મુખ્ય મંત્રીશ્રી તથા ભુજ મંદિરના મહંત સ્વામી અને ભુજ મંદિર દ્વારા જવાનોને ભોજન કરાવતા સંતો.

1

2

3

4

5

6

૧. ભારવા (રાજસ્થાન) મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨.[illegible] ([illegible])મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.૩.દેવીપુરા મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.૪. પ્રતાપપુરા (ઝાલીદેશ) મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પૂ. મહારાજશ્રી.૫.મેરાની મુવાડી (ઝાલીદેશ) મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પૂ. મહારાજશ્રી.
૬. ઘાટલોડિયા મંદિર (આર.સી.ટેકનિકલ રોડ)-ના પ્રથમ પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.મહારાજશ્રી તથા યજમાન પરિવાર દ્વારા પૂજન

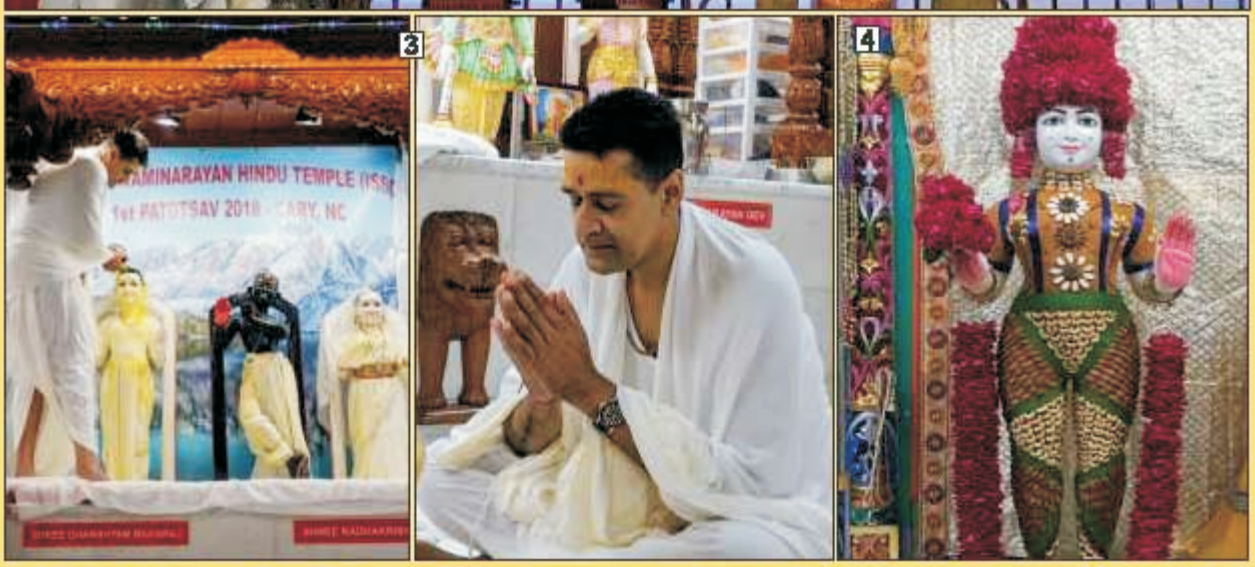

૧. અમેરિકાના સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર વિકોકનના ૩૧મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા અને અન્નકૂટની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨. પારસીપની (અમેરિકા)ના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા ઠાકોરજીના દર્શન.૩. અમેરિકાના કેરી (નોર્થ કેરોલીના) મંદિરના પ્રથમ પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૪. એટલાન્ટા મંદિરમાં ઠાકોરજીને ચંદનના વાઘના દર્શન.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-मई-१८

रु।. ५,१२,६३६/- पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र वुलवीच (यू.के.) ह. प.भ. भावेन पाठक।

रु।. ५,०००/- कंडिया अवधतेजेशकुमार - बोपल - अहमदाबाद

रु।. ५,०००/- मीनाबेन के. जोशी - बोपल - अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि मई-१८

दि. ०४-०५-२०१८ विष्णुभाई अम्बालालभाई पटेल जन्म दिन के उपलक्ष् यमें - चांदखेडा वाला ह. चिंतन तथा तपन - ओस्ट्रेलिया, प्रेरणास्त्रोत पी.पी. स्वामी

दि. १०-०५-२०१८ पटेल जयंतीभाई सांकलचंदभाई - माणसावाले

दि. १७-०५-२०१८ श्री महिला मंडल स्वा. मंदिर भक्तिनगर - अहमदाबाद, ह. सां.यो. हंसाबा तथा गीताबा (हलवद)

दि. १८-०५-२०१८ वंदन संजय कांसा - कलकत्ता

दि. २०-०५-२०१८ सत्संग समाज स्वामिनारायण मंदिर धोलका - ह. कोठारी सत्यसंकल्प स्वामी, महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज।

दि. २२-०५-२०१८ महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर, हर्षद कोलोनी, ह. दासभाई

दि. २३-०५-२०१८ महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर, विहार, ह. सां.यो. कैलासबा तथा मंगुबा

दि. २६-०५-२०१८ धर्मेश दयालभाई ठुम्मर - सुरत, ८. निवा, सोरीन ठुम्मर

दि. २७-०५-२०१८ स्वामिनारायण सत्संग सेवा मंडल - अहमदाबाद, श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज स्वामिनारायण मंदिर, जीवराजपार्क

दि. ३०-०५-२०१८ महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर, सुरेन्द्रनगर, हं. सां.यो. कोकिलाबा

दि. ३१-०५-२०१८ महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर, वांकानेर, हं. सां.यो. जयाबा तथा विद्याबा

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रात: ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कष्टो से न डरे वह भक्त सच्चा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

एक अच्छे में अच्छे संगीतकार थे । उसके संगीत की चारोतरफ चर्चा थी । ये जब संगीत को ताल और सुर के साथ कार्यक्रम करते थे । उस समय बैठे संगीत प्रेमी सिर हिलाकर वाह वाह करने लगते थे ।ऐसे प्रसिद्ध संगीतकार को एक राजा ने बुलाया और बोले कि भाई आप अच्छे संगीतकार है । और मुझे भी संगीतका शौक है । इस कारण से इस गाँव में आप का कार्यक्रम रखने की ईच्छा है ।

राजा का आमंत्रण संगीतकार ने स्वीकार किया लेकिन एक शर्त लगा दिया । मान्यवर ! मैं संगीत का कार्यक्रम अवश्य करुगा मेरी एक शर्त होगी ? आप स्वीकारे तो हाँ नही तो ना । राजा सोचे इसकी शर्त कैसी होगी !! मुझे इतना रुपया चाहिए । इसमें कोई परेशानी नही होगी । ये और क्या मागेगा ! ऐसा सोचकर बोले जो आप की शर्त हो बोले हमें स्वीकार है ।

तभी संगीतकार ने कहा मान्यवर ! कि जब मैं संगीत का कार्यक्रम करु तो कोई सिर न हिलाये, यही मेरी शर्त है । आप को स्वीकार हो तो कहे । राजा को यह बात सामान्य लगी । उन्होने तुरतं हा कर दिया । कार्यक्रम का दिन निश्चित हो गया । तथा समय निश्चित हो गया । इस तरफ राजा ने गाँव में ढिढोरो पिटवा दिया कि आने वाले संगीत के कार्यक्रम में नगरवासी सिर हिलायेगे तो उसे कटिन कारावास की सजा होगी । इस लिए संगीत के समय सिर नहीं हिलाना है । इस बात को सुनकर नगरवासी सोचने लगे कि संगीत का कार्यक्रम अपने नहीं जाना है । वही सिर हिल जाय तो बेकार में जेल की सजा होगी ।ऐसी संगीत सुनकर कोई दुर्बल नही होगा ।

इसमें वास्तव में जो संगीत प्रेमी थे । वे लोग सोचने लगे । जो होना हो, शायद सिर हिल भी जाये तो भी जेल की सजा स्वीकार कर लेगे । ऐसे जानकर संगीतकार का कार्यक्रम कैसे जाने दें ।

समयानुसार कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । राजा उच्च स्थान पर बैठ गये । और पूरे गाँव से पाँच लोग आये थे और कार्यक्रम शुरु हुआ । संगीतकारने अच्छी कला दिखाई । थोडी ही देर में पाँचो लोग सिर हिलाने लगे . यह देखकर राजा ने आवाज लगाकर फौजदार को बुलाया शर्तानुसार इन पांचो को जेल में डाल दो । तभी संगीतकार ने कहा मान्यवर किसी को कारावास में न भेजे । क्योकि मेरा नियम है कि जो सच्चे संगीत प्रेमी के सामने संगीत प्रस्तुत करता हूँ । जो जेल की सजा हेतु भी तैयार हो ऐसे सच्चे संगीत प्रेमी है । मैं पाँचो को प्रेम से संगीत सुनाउगा । संगीतकारने पूरे भाव से संगीत प्रस्तुत किया ।

मित्रो ! इस बात को पढकर क्या समझे ? एक संगीतकार जब ऐसी परीक्षा ले सकता है । सच्चे संगीत प्रेमी के सामने ही संगीत प्रस्तुत करता है । यदि साक्षात् परमात्मा की कृपा का पात्र बनना हो तो, यदि आप ईच्छा रखते है कि स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा आप के उपर रहे तो इसके लिए भगवान जो परीक्षा ले ये सहने के लिये तैयार होगे तो परमात्मा की कृपा आप पर बनेगी।

''सो सो माथा जाता रे, सोंधा छोगाला''

जब भजन-भक्ति के विषय में, नियम-निश्चय के बारे में जो दुःख सहने के लिए तैयार हो । सिर देकर

श्रीहरि की आज्ञा का पालन करने को तैयार हो वही सच्चा भक्त है । ऐसे शूरवीर भक्त के उपर प्रभु सदैव प्रसन्न रहते है । कष्ट से डर जाय वह सच्चा भक्त नहीं । कष्टो को सहन करे वही सच्चा भक्त है।

●

सत्य बोलने वाला सुखी रहता है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

एक गाँव में एक व्यक्ति था । उसे एक गलत आदत पड गयी थी । वह चोरी करने की आदत थी । उसको इस आदत से बाहर निकालने के लिए उसके गुरु ने काफी प्रयास किया लेकिन लोभ दोष के कारण वह चोरी करना भूला नही । अन्ततः शिष्य का भला हो इस लिये उसके गुरु किसी संयोग में सत्य बोलने की प्रतिज्ञा दिलाये । ये भाईभी इसबात पर अडिग हो गया । उसने कसम खा लिए हर परिस्थिति में मैं सत्य बोलूगा ।

एक दिन की बात है । एकदम सन्नाटे भरी रात थी । टावर के घडियाल में रात्रि के १२ बजे की टकोर होने लगी । मध्यरात्रि में सम्पूर्ण नगर के वासी सो गये थे । गलियो में कही पर कुत्ते भौक रहे थे । पूरा वातारण शांत था । इस समय चोर महाशय गली में टहल रहे थे । कहाँ चोरी करना है विचार कर रहा था । इतने में एक आदमी सामने मिला । सामने वाले व्यक्ति ने प्रश्न किया आप कौन है ? इस चोरने सही उत्तर दिया कि ''मैं चोर हूँ'' सामने वाला आदमी भी अपने पहचान बताया कि ''मैं भी चोर हूँ'' दोनो लोगोने हाथ मिलाया । उस चोरने कहा मैं चोरी करने निकला हूँ । उसने कहाँ राजा के गुप्त खजाने तक जाने का रास्ता मुझे ज्ञात है लेकिन अकेले जाने में भय लगता है । यदि तुम मेरे साथ आओ तो आज मैं राजा के खजाने में चोरी करें । चोर सहमत हो गया । दोनो लोग गुप्त मार्ग से राजा के खजाने तक पहुंच गये । थोडी खोज-बीन किये । तिजोरी की चाभी और तिजोरी खोले । इस तिजोरी में विश्व के अजायब तीन रत्न थे । दोनो ने विचार किया । रत्न तो तीन ही है । अपने तो दो लोग है । अपने रत्न दो रत्न ही ले जाते है और एक रत्न राजा के लिए छोड देते है । जिससे कोई तकलीफ न हो ।

इतने परिचय में दोनो मित्र हो ये । अगले व्यक्तिने बात-बात में चोरका पता ज्ञात कर लिया । और कहा पुनः अवसर मिलने पर बुलायेगे । दोनो अलग हो गये । प्रातः ६ बजे राजमहल में अकस्मात की सायरन बज गयी । सिपाही, फौजदार अधिकारी सभी आँख मीजते राजमहल में आ गये । राजा बोले सुबह उठते ही मैने तिजोरी का दरवाजा खुला देखा । ऐसा लगता है दरबार में चोरी हुई है । इस लिए शीघ्रताशीघ्र जाँच करिए ।

दिवान तीजोरीवाले घर में प्रवेश किये । जाँच करने पर पता चलता सभी गहने सुरक्षित है । लेकिन दुनिया के बहूमूल्य तीन रत्नो में से दो रत्न चोरी हो गया था । दिवान को रत्न की कींमत मालुम थी । उसने तीसरा रत्न अपने जेब में डाल लिया । राजा के पास आकर बताया कि सभी सुरक्षित है । लेकिन संसार का बहुमूल्य तीनो रत्न की चोरी हो चुकी है । राजा ने तुरंत जाँच का आदेश दिये । वास्तव में चोर के साथ दूसरे व्यक्ति यही राजाजी थे । उन्हे तीसरे रत्न की जाँच में विशेष रुचि थी । उन्होने गुप्तचर द्वारा उस सत्यवादी चोर का पता दिवान के पास भेज दिया ।

चोर पकडा गया और राज्य के कार्यालय में लाया गया । सभी लोग कौतुहलवस क्या होगा उसकी राह देख रहे थे । राजा चोर से पूछ-परछ शुरु किये । तुम चोर हो ? उसने उत्तर दिया । हाँ मैं चोर हूँ । तुमने कितने रत्न चुराये है । चोर उत्तर दिया हम दो चोर थे । दोनो मिलकर दो रत्न चुराये है । एक रत्न छोड दिय था । राजाने कहा कि चोरी के दण्ड स्वरुप कडी सजा होगी फिर भी तुम सत्य को बोल रहे हो ? तब चोरने कहा .....

(पेईज नं. २५)

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) (एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन में सम्पत्ति से अधिक 'प्रेम' समय और 'पवित्र आचरण' यह अधिक महत्वपूर्ण है ।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जैसे टी.वी. टेप, फोन ये सभी साधन है । उसी प्रकार सम्पत्ति भी जीवन में साधन ही है । जीवन जीने के लिए आवश्यक है । आप बिमार है तो कोई भी दवा लीजिए । लेकिन इसी के साथ आप अपने माता-पिता, पुत्र-पुत्री, को 'समय' दे । सिर पर प्रेम से हाथ फेरे तो उससे अधिक राहत मिलेगी । लेकिन आज किसी के पास समय ही नही है । क्यो कि ? हम क्या करते है ? हम अपने जीवन में आवश्यकता से अधिक संचय करने में पागल हो गये है । इकट्ठा करके लोग किस तरह की विल बनाते है । और उसमे लिखते है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे बच्चो को दे दे । इसके बाद भी यही क्रिया लोग करते है कि मेरे बाप दादाने मरने के बाद इतनी सम्पत्ति दिये है । तो मैं भी मरने के बाद इतना ही धन बच्चो को दूँ । तो इसका उपयोग किये वगैर रह जाता है । इसका क्या मतलब है । आवश्यकतानुसार रखे ठीक है, जीवन में कभी खराब दिन भी आते है उसमें काम ले । बाकी अपने जीते जी बच्चो को दे दे । इसका उपयोग करते देख कर खुश रहे । उनहें समय देकर मार्गदर्शन और संस्कार दे । जिससे ये वस्तु अच्छी जगह पर उपयोगी हो । तो ही उसका उत्तम उपयोग होगा । तत्पश्चात अपने जाने के बाद किस जगह पर उपयोग होगा किसे पता ? कम सम्पत्ति हो तो अपने मन में कभी ऐसा विचार मत लाये कि आप के पास कम है । जिसका मूल्यांकन करोडो में भी न किया जा सके ऐसी परमात्मा प्रदत्त आँख, कान, नाक, हाथ, पैर ये सभी सुरक्षित है ? जिसके पास नही है उसके पूछे क्या कष्ट है . अपना कोई एक हाथ माँगे और बदले में ५० करोड दे तो कोई देगा । कोई कभी भी न दे । तो इस तरह जीवन में कभी हिम्मत नही हारनी चाहिए । और आप के पास जो वस्तु हो उसे घर के सभी सदस्य नही तो एक दो को पता होना चाहिए कि आप के पास अमुक वस्तु है । और यहाँ पर पडी है । नहीं तो मरणोपरान्त मिलेगा तो आप को अपयश ही मिलने वाला है । छिपाकर रखे ऐसा किसीने नही कहा है । इस लिए जब तक हाथ पैर चल रहा है सभी व्यवस्थित रखकर तैयार रहना चाहिए । जीवन में शायद दूसरे क्षण जाना पडे । किस क्षण जाना है अपने को ज्ञात नही है । अपने पास समय कम भी है और अधिक भी है । इस लिए समय का श्रेष्ठ उपयोग करना चाहिए । सम्पत्ति, फोन, टी.वी. टेप, इत्यादि साधन मायावी है । इसका दूरुपयोग होने पर जीवन कष्टदायक हो जाता है । इस साधनो को खराब होने पर बनाया जा सकता है या नया खरीदा जा सकता है । लेकिन इसका दुरुपयोग करने से आदमी खराब हो जाये तो उसे बनाने के लिए कहाँ ले जा सकते है । यह बडी कमी होगी । उसे शीघ्र सुधार नहीं सकते है । इस लिए इन सुविधा को मन में ठानकर कम कर देना चाहिए यह काम भी कठिन है क्यो कि ? मन माया के प्रतिखिचता है । हम किसी कार्य को करे । मान ले पुरानी नौकरी छोडकर नयी नौकरी करले तो पुरानी भले ही कम थी लेकिन अच्छी थी । तो क्या होता है । शरीर यहाँ

कार्य करता है और मन पुरानी जगह पर रहता है। इस लिए अपनी भी यही दशा है। जनम-जनम से मन में विषय वासना भरी है। इस लिए मन वही जाता है। उसमें से दूर करके भगवान में लगाना है। मन को तो कुसंग प्रिय है। इसमें प्रेरित होता है क्यो कि ? अनंत जन्मो से यही भोग किया है। अपने किये पूर्ण कार्य सूक्ष्म शरीर में होता है। उसे लेकर ही आते है। अन्दर विकार ही भरा है। सूक्ष्म शरीर के अन्दर ऐसा होता है। किस तरह ? हम दीपक को कमरे में रखते है तो उजाला हो जाता है। यदि दीपक को कमरे से बाहर लाये तो अंधेरा हो जाता है। कभी ऐसा होता है कि दीपक बाहर आये और उजाला अन्दर ही रहे ? दीपक प्रकाश को लेकर आ जाता है। इसी तरह अपनी स्थूल काया रुम की तरह है। हम स्थूल शरीर त्याग करते है तब आपना आत्मा रुपी दीपक, इन्द्रियो, ज्ञान ये सूक्ष्मशरीर में होते है उसे लेकर चले जाते है। यह कैसे पता चलेगा ? मान लीजिए हम सो जाते है तो अपना स्थूल शरीर हाथ, पैर, आँखा, नाक, कान, सभी निक्रिय होते है। फिर भी सपने में चलना, कभी चोट का लगना होता है। खाने पर स्वाद मिलता है जैसी क्रिया जागृतावस्था में वैसी ही शयनावस्था में होती है। तो क्यों ये सूक्ष्म शरीर में होती है। इसलिए अनुभव (स्वपनावस्था) होता है। जीव जब शरीर त्याग कर दूसरे योनि में जाता है। केवल वहाँ पर स्थूल शरीर वहाँ प्राप्त होती है। सूक्ष्म वैसे ही रहता है। जैसे स्थूल शरीर का आकार होता है वैसे सूक्ष्म शरीर का आकार होता है। हम कहते है स्थूल शरीर पाँच तत्वो से बनी है। उसमें पृथ्वी और जल तत्व का अभाव होता है। और अति सूक्ष्म होते है। हमारी शरीर असंख्य कोशिकाओ से बनी है। उसमें मुख्य पाँच कोश होते है।

अन्न मय कोश : जो स्थूल शरीर दिखाई देती है वह अन्नमय कोश से बनी है।

प्राणमय कोश : यह प्राणशक्ति का केन्द्रबिन्दु है। इसमें प्राण शक्ति केन्द्रित होती है। यहाँ से सूक्ष्म शरीर प्रारम्भ होती है।

मनोमय कोष : इसमें संकल्प-विकल्प संग्रहित होता है।

विज्ञानमय कोश : जो ज्ञान होता है विज्ञानमय कोश में संग्रहित होता है।

आनंदमय कोष : यह सबसे सूक्ष्म होता है। इसमें आत्मा का निवास होता है।

जीव यदि मनोमयकोश, विज्ञान कोश बहु सूक्ष्म शरीर में ले जाता है। इसमें विचार भरे रहते है। उसमें पहले का मायिक भरा होताहै। इस लिये मायिक पदार्थ में अधिक आकर्षित होता है। तो हमें जागृत होकर समझकर विचार करना है कि मन को इसमें से बाहर निकालकर शुद्ध आचरण करके भगवान से जोडना है। आज मानव जीवन के अन्दर धर्म का आचरण कम हो गया है। हम धर्म का पालन न करे तो अधुरा ज्ञान है। इस लिए संकल्प विकल्प सात्विक रखना शरीर शूद्धि दोनो में अन्तर है। शरीर सूचिता के साथ वाणी की पवित्रता, स्वभाव की पवित्रता भी होनी चाहिए। नहीं तो कपडा शरीर बाहर से शुद्ध दिखे लेकिन अन्दर गंदकी भरी हो तो अच्छा नही है। इस लिए जीवन में 'पवित्रता आचरण' रखना तथा मायिक पदार्थ की शरणागति भी नही स्वीकार करना चाहिए। भगवान श्री कृष्णने अर्जुन को पूरी गीता का उपदेश दिये कि मेरे शरणमें आ जाओ इसी में सब कुछ है। शास्त्रो का ज्ञान भी आ गया। तो सात्विक श्रद्धा से ''श्री नरनारायणदेव'' की शरणागति स्वीकार कर लेना चाहिए। देखिए अपना प्रेम जिसके उपर होता है उसे सब कुछ करने का मन कहता है। इसके लिये कितना भी कठिन कार्य हो तो भी सरल लगता है। उसी प्रकार हमें सच्चे दिल से 'श्री नरनारायणदेव' की शरणागति स्वीकारी होगी। उनकी सभी आज्ञा सरलता

से पालेगा । इसलिए सच्चा प्रेम ''परमात्मा को करना चाहिए'' मायिक वस्तु साधन है । इसमें लिप्त नही रहना चाहिए।

●

"निष्काम भक्ति"

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

सुख प्राप्ति की इच्छा से मनुष्य केवल दौड धूप करता है। मनुष्य को जीवन जीने के लिए मुख्यतया दो ही मार्ग है। (१) अध्यात्म और (२) व्यवहार, सुख प्राप्त करने के लिए जिसने व्यवहार मार्ग चयन किया है। वह संसार के भौतिक पदार्थो, सुख, यश-कीर्ति, मान-सम्मान मिले उसे वह सुख मानता है । वास्तव में यह सुख की परिभाषा नही है। यह सुख युक्त दुखका मार्ग है। यह सुख अल्पायु होता है। लेकिन जिसने अध्यात्म मार्ग का चयन किया है। यह आंतरिक सुख है इसे सुख माना है। इस लिये हमको अध्यात्म मार्ग पर चलना चाहिए। आत्मामार्गी का एक ध्येय होना चाहिए। सर्वोपरी स्वामिनारायण भगवान और सत्पुरुषो को खुश रखे। इनकी कृपा का फल धाम की प्राप्ति होती है। भक्ति और सत्संग रुपी साधन से ही स्वामिनारायण भगवान की दिव्य मूर्ति से सुख मिलेगा। यही सही सुख है।

अध्यात्मार्ग में कोई साधन दो प्रकार के होते है। जिसमें (१) सकामभाव और (२) निष्कामभाव । सकामभाव अर्थात क्या ? भौतिक सुखो जैसे गाडी, बंगला, फैक्टरी, जमीन इसी प्रकार दैहिक सुख देने वाली साधनो की प्राप्ति हेतु अपेक्षा युक्त भजन भक्ति करना ही सकाम भाव है। भक्ति तथा मात्र आत्मा के सुख के लिए, आत्मा उन्नति के लिए, भजन भक्ति या मूर्ति से जुडना इसे निष्काम भाव कहते है। संक्षिप्त में कहे तो भौतिक सुख, दिखाई देने वाले सुख के लिए करे वह सकाम भाव भक्ति कही जाती है। और अभौतिक सुख परमात्मा के सुख की अपेक्षा के साथ कार्य, साधन, भजन, भक्ति करे वह निष्काम भाव भक्ति होती है। निष्काम भाव भक्ति से भगवान की कृपा प्राप्त होती है।

साधन भक्ति तो अपने अधिक करते है। लेकिन भक्ति कितनी करते है यह विशेष नही है। माला कितना किये महत्व का नही। कैसे किये ये महत्वपूर्ण है। शायद ५०० माला किये हो लेकिन ये माला फेरते फेरते माला में महाराज की मूर्ति मन में न रही हो तो माला किया बेकार है। उसका फल शून्य है। माला अधिक फेरना महत्वपूर्ण नही है लेकिन महाराजकी मूर्ति मन-चित्त से जुडे ये महत्वपूर्ण है। श्रीजी महाराज ने गढडा में २८ वें वचनामृत में कहे है कि भगवान का भक्त हो उसे कर्माध्धीन संयोगात शुली पर चढाया गया हो तो भी हम उस समय भी उसके पास खडे रहते है ताकि भक्त के मन में ये विचार न पैदा हो कि भगवान शूली तक न पहुंचा दे । इसी प्रकार स्वयं की शरीर के सुख का संकल्प न करे तथा सभी कष्टो को झेलले ऐसे निष्कामी भक्त के उपर भगवान अति प्रसन्न होते है।

हम लोग भक्ति भगवान की खुश करने के लिए करते है। कभी-कभी निष्काम भक्ति में सकाम भावना जुड जाती है। क्योकि हम दैहिक सुख हेतु प्रयत्न करते है। लेकिन आत्मा, परमात्मा का सुख प्राप्त करने के लिए प्रयत्न नही करता है। उसे भौतिक सुख में खुशी है। जिस कारण पंच विषयी सुख में पड जाते है। जिस कारण से यश-प्रसिद्धि-कीर्ति बढे जगत में वाह-वाही हो उसके लिए भक्ति करते है। इस कारण से यह भक्ति सकाम हो जाती है।

सकामी भक्ति अर्थात् रेत की दीवार हवा का झोंका आने पर दीवार गिर जाती है। इसी तरह सकामी व्यक्ति सत्संग से बाहर चला जाता है । श्रीजी महाराज और संतो अपना संकल्प पूरा करें। अपना लाभ दे तब तक उनके बारे में श्रद्धा बनी रहती है। इच्छा न पूरी होने

पर मनुष्य भाव आ जाता है । श्रद्धा समाप्त हो जाती है । सकामी भक्ति काम चलाउ होती है । स्थायी नहीं होती है । सकामी भक्ति अथवा दम्भपूर्ण भक्ति जिस में केवल मात्र दम्भ ही होता है । दूसरे को दिखाना भक्ति नहीं होती है । घर में दिन भर हम टी.वी. देखते रहते है अथवा गप्पा मारते है । किसी के आने पर हाथ में माला लेकर बैठ जाते है । और कहते है कि आज २०० माला फेरा । आज एक घंटा ध्यान किया । आज मंदिर पैदल जाकर दर्शन किया । वहाँ पर लाख रुपया धर्मादा दिया । यह दूसरो से बताता है तो यह दिखाने की भक्ति है । यह सकामी भक्ति होती है । जिससे देखने से सुख, गाडी, बंगला, सब मिलता है उससे श्रीजी महाराज की कृपा नही मिलती है । इस निष्काम भाव युक्त भक्ति करना चाहिए.

निष्काम भाव भक्ति करते समय ध्यान रखना चाहिए कि मैं संसार का जीव नही हूँ । मैं भगवान स्वामिनारायण आश्रित हूँ । मैं तो भगवान का भक्त हूँ । भगवान का सुख ही मेरे लिए सच्चा सुख है । मेरी भक्ति मात्र भगवान को खुश करने के लिए है । अपेक्षा रहित है । भक्ति समझदारी पूर्वक करना है । महाराज जो कर रहे है मेरे अच्छे के लिए कर रहे है । इसलिये भगवान पर भरोसा रखिए । हमे ऐसे सर्वोपरि सभी अवतारो के अवतार, सभी कारणो के कारण सर्व नियंता महाराज मिले है । फिर भी हमे भौतिक सुख की ईच्छा रहती है । भौतिक सुख के लिए सकाम हो जाते है । हम कौन है ? अपना ध्येय क्या है ? यह विचारकर भौतिक सुख की ईच्छाये रखना ही नही । ऐसे सुख से दूर रहना ।

अभौतिक सुख जो है यह महाराज की मूर्ति का सुख है । यही सत्य सुख है । इससे महाराज और संत खुश होते है । ऐसी निष्काम भक्ति करने का दृढ विश्वास रखे और भगवान का अनहद कृपा मिले ऐसी प्रार्थना करे ।

अनु. पेईज नं. २१ से आगे

''मैं अपने गुरु के वचन से बँधा हूँ । उन्होने मुझे सुधारने के लिये काफी प्रयास किया फिर भी मैं लालच बस चोरी करना नही छोड सका, फिर मेरे गुरु सत्य बोलने का आदेश दिया है । उसका ठीक से पालन करता हूँ । ''चोर चोरी किया रत्न टेबल पर रख दिया । इस रत्न को मैने चुराया है । आप के समक्ष समर्पण करता हूँ ।

दिवान अपना बड़प्पन दिखाने के लिए कहने लगे । यह चोर एक रत्न चुराया है । शादय फिर से आकर तीसरा रत्न भी चोरी कर लिया हो । वह भी जल्द से पकड़ा जायेगा । सभी के आश्चर्य अवस्था में राजाने दूसरा रत्न टेबल पर रख दिये और दिवान को बोले तीसरा रत्न भी आप टेबल पर रख दे । राजा के शब्द से लोग स्तब्धहो गये । दिवान के जेब में तीसरा रत्न था । उसका मुह गिर गया । उसने तीसरा रत्न टेबल पर रख दिया ।

राजाने दरबार में अगली रात्रि में भेषबदल कर सभी बात सुनकर अगले चोर की सत्य बोलने की आदत के कारण राज्य का मंत्री पद दिये । दो रत्न ही चोरी हुए थे लेकिन तीनो रत्नो की चोरी कहने वाले दिवान को झूठ बोलने के बदले में पूरा जीवन कारावास की सजा सुनाई ।

मित्रो ! आपने देखा कि गुरु की वाणी में विश्वास रखकर इस चोर ने सत्य बोलने का नियम बना लिया था । तो उसे मंत्री पद मिला । बाद में ज्ञान हुआ कि गुरु के बचन से इतना सुखी हो गया हूँ । अब चोरी भी नही करुगाँ । सत्य वचन का पालन करुँगा । स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में आज्ञा किये है कि - ''श्वेत कर्म न कर्तव्य'' अपने आराध्य देव की आज्ञा को जो पालन करेगा वह निश्चित सुखी रहेगा ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अधिक पुरुषोत्तम पक्ष उल्लास पूर्वक मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की के सुंदर मार्गदर्शन से तथा हरिचरण स्वामी (कलोल), कोठारी जे.के. स्वामी (मेम्बरश्री), कोठारी शा. मुनि स्वामी, जे.पी. स्वामी भंडारी और भक्ति स्वामी के सुंदर प्रयास से अधिक जेठ पुरुषोत्तम मासमे पूरे वर्ष भर आने वाले तिथियों के अनुसार अपने उत्सव खूब धूम-धाम से मनाया गया। हजारो मुमुक्षु अधिक पुरुषोत्तम मास में ऐसे भव्य अलौकिक व्रत उत्सव का दर्शन करके धन्य हुए।

निम्नलिखित उत्सव तथा उसके यजमान बनने वालो की सूची -

ग्वालबाल दर्शन : अधिक जेठ सुद-१ ता. १६-५-१८ एक हरिभक्त।

रथयात्रा : अधिक जेठ सुद-२ ता. १७-५-१८ एक हरिभक्त।

श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव-अन्नकूटोत्सव : अधिक जेठ सुद-३/४ ता. १८-५-१८ अ.नि.प.भ. नाथजीभाई इच्छाराम शुक्ल अ.नि.प.भ. ईश्वरलाल लाभशंकर पण्ड्या ह.प. राजेशभाई विठ्ठलभाई शाह, भगवतभाई, श्री हरिवदनभाई अहमदाबाद।

वसंत पंचमी हवेली में श्री घनश्याम महाराज का उद्घाटन-अन्नकूट : अधिक जेठ सुद-५ ता. १९-५-१८ प.भ. शारदाबा शेलत - अहमदाबाद।

कुंजगली : अधिक जेठ सुद-६ ता. २०-५-१८ वर्षाबेन नविनचंद्र पाठक परिवार लंदन ह. भाविन पाठक।

शाकोत्सव : अधिक जेठ सुद-७ ता. २१-५-१८ एक हरिभक्त।

राधाष्टमी : अधिक जेठ सुद-८ ता. २२-५-१८ फुलमंडली की बहने (हवेली) सां. मंजुबा।

रामनवमी-श्रीहरि प्रगटोत्सव, बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव-अन्नकूट : अधिक जेठ सुद-९ ता. २३-५-१८ प.भ. अश्विनभाई पूजारा - अहमदाबाद।

विजयादशमी : अधिक जेठ सुद-१० ता. २४-५-१८ एक हरिभक्त।

मोतीका हिंडोला (झूला) : अधिक जेठ सुद-११ ता. २५-५-१८।

वामन बारस-रंगमहल श्री घनश्याम महारज का पाटोत्सव-अन्नकूट महोत्सव : अधिक जेठ सुद-१२ ता. २६-५-१८ प.भ. अश्विनभाई पूजारा अहमदाबाद, प.भ. वर्षाबेन नविनचंद्र पाठक, ह. भाविन पाठक - लंदन (वामन बारस की भी यजमान वर्षाबेन पाठक है)

ड्रायफ्रूट का हिंडोला : अधिक जेठ सुद-१३ ता. २७-५-१८। ठक्कर अजयभाई बलदेवभाई

नृसिंह जयंती : अधिक जेठ सुद-१४ ता. २८-५-१८। एक हरिभक्त।

शरदोत्सव : अधिक जेठ सुद-१५ ता. २९-५-१८। प.भ. भालजा साहब मंडल आरीवाल प्रबोधछगनलाल।

केसर स्नान : अधिक जेठ वद-१ ता. ३०-५-१८। अ.नि. अमृतभाई नरसिंहभाई पटेल, गौरीबेन अमृतभाई पटेल, जतिनभाई, अप्पुभाई अहमदाबाद।

फूलका हिंडोला : अधिक जेठ वद-२ ता. ३१-५-१८।

चौक्लेटका हिंडोला : अधिक जेठ वद-३ ता. १-६-१८। पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

जरीका हिंडोला : अधिक जेठ वद-४ ता. २-६-१८। पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

समूह महापूजा : अधिक जेठ वद-५ ता. ३-६-१८। मुख्य यजमान : प.भ. अरविंदभाई आर. दोंगा, अहमदाबाद,

पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

फूल का हिंडोला : अधिक जेठ वद-५ ता. ४-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

छपैयाधाम दर्शन : अधिक जेठ वद-६ ता. ५-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

वनविचरण दर्शन : अधिक जेठ वद-७ ता. ६-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव : अधिक जेठ वद-९ ता. ७-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

नंद महोत्सव : अधिक जेठ वद-९ ता. ८-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

हिमालय दर्शन : अधिक जेठ वद-१० से जेठ वद-१२ ता. ९-६-१८ से ता. ११-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

शिवरात्रि-शिवपूजन-श्री हनुमानजी की पूजा : अधिक जेठ वद-१३/१४ ता. १२-६-१८ । पाठक वर्षाबेन नवीनचंद्र, ह. भाविन पाठक - लंडन।

अन्नकूट महोत्सव-गोवर्धन पूजा : अधिक जेठ वद-३० ता. १३-६-१८ । हिराणी विनाबेन वेलजी - लंदन

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेकनिकल रोड) घाटलोडिया प्रथम उद्घाटन एवम् कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गाँधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से उसी प्रकार श्री स्वामिनारायण मंदिर, समस्त सत्संग समाज घाटलोडिया (आर.सी. टेकनिकल रोट) के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया का प्रथम उद्घाटन के उपलक्ष में ता. १६-५-१८ से ता. २१-५-१८ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्री भक्तचिंतामणि ग्रंथ के अन्तर्गत परचा प्रकरण पाँच दिन की रात्रि कथा पारायण स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) वक्ता स्थान पर हुई थी । कथा का संचालन स.गु. शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट) सुंदर शोभा बढाये । इस अवसर पर कई हरिभक्त यजमान बनकर सुंदर लाभ लिये । ता. २०-५-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों द्वारा ठाकुरजी षोडशोपचार अभिषेक उद्घाटन उल्लास के साथ मनाया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी प्रेमी भक्तो को आशीर्वाद दिये । कई धामो से अनेक संत पधारे थे ।(कोठारीश्री घाटलोडिया)

हिरावाडी के आँगन में पवित्र स्वरमास में श्रीमद् भागवत पंचरात्रि पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गाँधीनगर) के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर हीरावाडी-अहमदाबाद में पवित्र पुरुषोत्तम मास में ता. १६-५-१८ से ता. २१-५-१८ तक श्रीमद् भागवत रात्रीय पंचान्ह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) वक्ता पद पर सम्पन्न हुई । इस अवसर पर ता. १७-५-१८ के दिन सुबह सबी बहनोने गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवाले आये थे और बहनो को दर्शन आशीर्वाद देकर खुश हुई । कथा में आनेवाले श्रीकृष्ण जन्मोत्सव इत्यादि प्रेम से मनाया गया । ता. २०-५-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रातः ११ बजे आये थे । सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद देकर खुश हुए । कथा के समय कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा अन्य धामो से संत आये थे । सम्पूर्ण अवसर का संचालन स.गु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजीने शोभा बढ़ाया । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गाँधीनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर गाँधीनगर (से-२) पवित्र पुरुषोत्तम मास में दशावतार रात्रिय पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर गाँधीनगर (से-२) पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास में ता. २१-५-१८ से २७-५-१८ तक स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से रात्रीय दशावतार सप्ताह पारायण उल्लास के साथ पूर्ण हुआ । हजारो हरिभक्तोने कथा

सुनी सुनकर धन्य हुए। इस अवसर पर कई धामो से संत आये थे। कालुपुर मंदिर से स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी आदि आये थे। सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. व्रजभूषणदासजी और स.गु. शा. चैतन्यस्वरुपदासजी सुंदर रुप से शोभा बढाये । अनेक हरिभक्त सेवा के यजमान बनकर लाभ लिये। गाँधीनगर से राजनैतिक व्यक्ति भी आये थे। कथा का भव्य और सुंदर आयोजन हुआ था।(शा.स्वा. व्रजभूषणदासजी)

कांमलपुर गाँव में प्रथम सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से सत्संग का नये गाँव कांमलपुर में ता. १५-५-१८ की रात्रि ८-३० बजे से ११-३० तक सुंदर सत्संग सभा का आयोजन हुआ। जिसने स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) और बालु स्वामी द्वारा सम्प्रदाय की परम्परा, श्री नरनारायणदेव की निष्ठा आदि के उपर कथा वार्ता का सुंदर लाभ ६०० जितने भक्तो ने लाभ लिया । अन्त में नास्ता रुपी प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रत्येक महीने नियमित सभा का आयोजन किया जाये । जिसका गाँव वासीयोने ध्यान दिया। (दिनेश चौधरी युवक मंडल माणेकपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का ३१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का ३१ वाँ पाटोत्सव ता. ४-३-१८ के दिन श्री घनश्यामभाई लालजीभाई ठक्कर ने यजमान पद से धामधूम से मनाया। इस अवसर पर महापूजा अभिषेक तथा अन्नकूट विधिवत रुप से पूर्ण हुआ था। प्रसंगोचित सभा में जेतलपुर मंदिर के संतोने कथा वार्ता का लाभ दिये और अन्नकूट की आरती भी किये। (घनश्याम आर. ठक्कर - कलोली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गाँधीनगर (से-२३) श्रीमद् भागवत पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्यारे आशीर्वाद आज्ञा से तथा शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजीकी प्रेरणा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२३ में पवित्र पुरुषोत्तम मास में सुद-१ से ६ के बीच शा. स्वा. हरिप्रियदासजी के वक्ता पद से पंचान्ह पारायण का भव्य व्यवस्था हुई थी । वक्ताश्री संकीर्तन संगीत के साथ कथा को सरलता से समझाये थे। जिसे सुनकर सभी हरि भक्त धन्य हुए। इस कथा के यजमान घमासणा के (वर्त. गांधीनगर) सिविल इंजीनीयर प.भ. बेचरभाई प्राणदास पटेल और ध.प. शारदाबेन बेचरबाई पटेल परिवार था।

कथा के बीच जन्मोत्सव, रासोत्सव जैसे प्रसंग उत्साह पूर्वक मनाये गये । इस अवसर पर सोकली, टोरडा, धोलका, जूनागढ आदि धामो से आये संतो का दर्शन आशीर्वाद का लाभ सभी को प्राप्त हुआ।

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की आसीम कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के स.गु. स्वामी हरिभक्तिदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से श्रीहरि प्रसादीभूत स्थान ऐसे रणजीत गांव में श्री हरिकृष्णधाम मंदिर का भव्य निर्माण पूर्ण होते ही ता. ६-५-१८ से १०-५-१८ तक पाँच दिन का मूर्ति प्रतिष्ठा समारोह उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष में सा.स्वा. धर्मजीवदनासजी तथा शा. सत्यवदन स्वामी वक्ता पद से सुंदर कथा का रसपान हजारो भक्तो को कराये। धार्मिक और सामाजिक क्रियाओ मे रक्दान कैप १०२ जितना बोतल खून इकट्ठा किया गया था । धार्मिकि क्रिया में महापूजा, जन्मोत्सव, वचनामृत व्याख्यान माला, कीर्तन संध्या, अभिषेक, अन्नकूट, युवा मंच महिला आदि सुंदर

कार्यक्रम हुआ । परम पूज्य लालजी महाराजश्री अवसर पर आकर मंदिर में दर्शन करके सभा में आकर सभी को आशीर्वाद दिये । ५०० से अधिक सत्संगियो के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ज्ञान गोष्ठी करके सभी को खुश किये । साथ ही साथ बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे और् सभी बहनो, यज्ञमान परिवार सभी पर खुश होकर आशीर्वाद प्रदान किये । अनेक धामो से आये संत, महंतओश्री और सांख्ययोगी बहने आयी थी .

ता. १०-५-१८ के दिन प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य. महाराजश्री का आगमन होने से मूली देश के हजारो हरिभक्त दर्शन करके खुश हुआ । सर्व प्रथम नये मंदिर में ठाकुरजी प्राण प्रतिष्ठा षोडशोपचार-अभिषेक अच्छे विधी से करके कथा यज्ञ की पूर्णाहुति करके सभा में आकर लोगो को आशीर्वाद दिये लोग हर्षित हुए । हलवद का नियम, सत्संग अधिक वृद्धि करे ऐसा आशीर्वाद दिये । रास्ते में ध्रांगध्रा में अपने नव निर्माण मंदिर का निरीक्षण करके खूब खुश हुए । (प्रति. अनिल दुधरेजिया - ध्रांगध्रा)

देवीपुरा (चराडवा) में नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की आसीम कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी आशीर्वाद से चराडवा के पास नया देवीपुर गाँव में मूली मंदिर के श्रीजीस्वरुप स्वामी द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर का भव्य निर्माण पुरा हुआ । ता. ३-५-१८ से ७-५-१८ के बीच मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष में श्रीम्द भागवत पंचान्ह कथा शा.स्वा. व्रजवल्लभदासजी तथा शा. विश्वविहारी स्वामी वक्ता पद पर थे ।

ता. ७-५-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा अधिक भव्यता से हुआ । पूरे गाँव के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये । सभा संचालन मोरबी मंदिर के महंत शा. भक्तिनंदन स्वामीने किया । अनेक धामो से संत और सांख्ययोगी बहने आयी थी । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाभी आये थे । और बहनो का सत्संग देखकर खुश हुई । इस गाँव के मंदिर के कोठारी मनजीभाई मनसुखभाई, अमरतभाई, घनश्यामभाई और तेजवजीभाई आदि भक्तो की सेवा प्रेरणादायक रही थी ।(प्रति. अनिल बी. दूधरेजीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बलदाणा मूर्ति प्रतिष्ठा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मूली मंदिर के अन्तर्गत बलदाणा गाँव में भाइयो और बहनो के जीर्ण मंदिर को नये मंदिर में बदलकर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. १६-४-१८ से २२-४-१८ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह कथा स.गु. शा. श्रीजी स्वामी वक्तापद पर किये । व्याखानमाला में पूजारी स्वामी त्यागवल्लभदासजी वक्ता पद पर थे । इस अवसर पर सांस्कृतिक धार्मिक और समाज उपयोगी क्रियाये हुई । रक्तदान कैम्प, विद्यार्थियो को स्टेशनरी, अन्नकूट प्रसाद को अनाथ आश्रम में बाँटा गया था । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये यहाँ का सत्संग देखकर खूब खुश हुए ।

ता. २२-४-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । और दोनो मंदिर में स्वयं के शुभ हाथो द्वारा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा करके सबको आशीर्वाद दिये । समस्त प्रबन्धकोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी ने किया था । सभा का संचालन मोरबी मंदिर के महंत भक्तिनंदन स्वामी तथा शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी ने शोभा बढ़ाया था । मूली और सुरेन्द्रनगर मंदिर के संत-पार्षद मंडल की सेवा अति प्रेरणादायक थी ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ कोलोनीया मंदिर के पूजारी भरत भगत की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में अप्रैल मास के प्रथम सप्ताहन्त शनिवार शाम को ५ से ८ तक सभा हुई । जिस में प.पू. बड़े महाराजश्री के

जन्म उत्सव के उपलक्ष में ठाकुरजी के सामने भजन-कीर्तन कथा किया गया । भरत भगतने प.पू. बड़े महाराजश्री के सत्संग की अनेक प्रवृत्ति को याद किये । यजमानो के सन्मान के बाद संध्या आरती और श्री हनुमानजी की आरती करके सभी लोग प्रसाद लेकर धन्य हुए ।(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ ह्युस्टन मंदिर के महंत स्वामी नीलकंठदासजी की प्रेरणा से सुंदर सत्संग का कार्यक्रम होता है । अप्रैल महीने में शनिवार स्पताहन्त सायं प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी के सामने श्रीहरिनाम स्मरण महामंत्र धून-कीर्तन भक्ति और कथावार्ता किये थे । सभी हरिभक्तने प.पू. बड़े महाराजश्री के सुंदर स्वास्थ्य के लिए परमकृपालु श्रीहरि से प्रार्थना किये । महंत स्वामी यजमानो का स्वागत करके ठाकुरजी की संध्या आरती और श्री हनुमानजी महाराज की आरती की गयी । नित्य, नियम करके प्रसाद ग्रहण करके सभी लोग धन्य हुए । (प्रविणकुमार शाह)

छपैयाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने पारसीप के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग की प्रवृत्ति सुंदर होती है । हरिभक्त अधिक संख्या में आकर उत्सव, समैया दर्शन करके लाभ लेते है । अप्रैल महीने के तीसरे शनिवार को अपने प.पू. बड़े महाराजश्री को जन्मोत्सव के लिए सभी हरि भक्त ठाकुरजी के सामने उनके सुंदर स्वस्थ स्वास्थय के लिये प्रार्थना किये । तथा श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून एवम् कीर्तन समूह में किये । यजमानो का सत्कार करके ठाकुरजी की संध्या आरती की तत्पश्चात श्री हनुमानजी की आरती करके सभी लोग प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए । (शाह प्रवीणभाई)

रणजीतगढ मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर के २१६ आजीवन सदस्य बने

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से तथा उनके प्रिय हरिभक्तो के आर्थिक सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर श्री स्वामिनारायणण मासिक अधिक सक्रिय प्रतिनिधी श्री अनिलभाई दूधरेजिया (ध्रांगध्रा) द्वारा २१६ जितने सदस्य श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्य बने है । अपने बड़े उत्सव के आयोजक संत-हरिभक्त को ऐसी सुंदर प्रेरणात्मक सेवा करने की प.पू. लालजी महाराजश्री की विशेष सूचना है ।

श्री स्वामिनारायण मासिक आजीवन सदस्यो को सौजन्य भेट

प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद । एवम् प्रेरणा से एप्रोच मंदिर के उत्सव अवसर पर १० आजीवन सदस्योने रुपया २५०/- व्यक्तिगत (रुपया २५००/-) सौजन्य भेट की सेवा अ.नि. सोनी अपूर्व रश्मिकांतभाई (दहेगाम) ने किया था ।

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के संत (वर्तमान-वडनगर मंदिर) स.गु. स्वामी बालमुकुन्ददासजी गुरु स.गु. शा. स्वामी भक्तिप्रियदासजी (उम्र ७१ वर्ष) ता. ४-५-१८ के दिन श्रीहरि का अखण्ड स्मरण करते हुए वडनगर मंदिर मे अक्षरनिवासी हुये है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

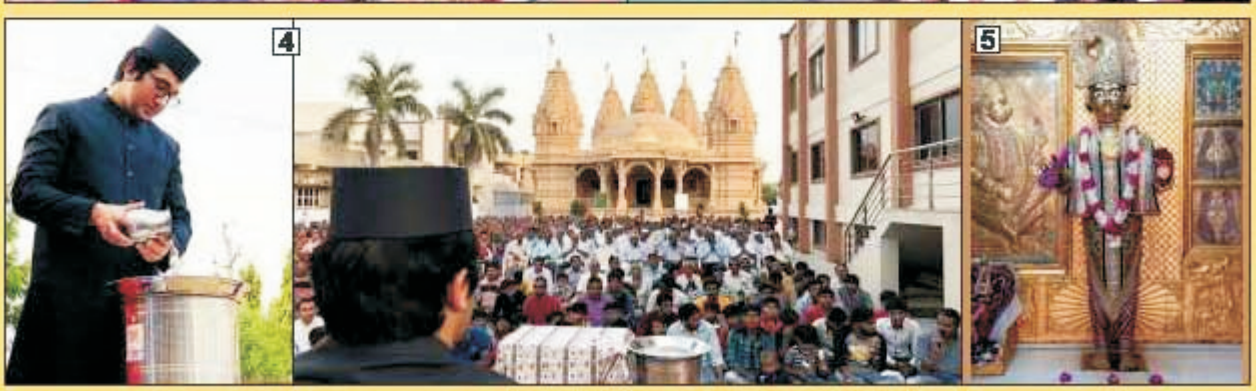

(१) सुणावकस मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा सभा में हरिभक्त लोग। (२) नारायणपुरा मंदिर द्वारा हरिद्वार में आयोजित भागवत सप्ताह में कथा का पूजन करते हुए यजमान परिवार तथा कथा श्रवण करते श्रोता। (३) हीरावाडी (बापुनगर) के पाटोत्सव के अवसर पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (४) पंचवटी कलोल का प्रथम पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (५) नवानगर मंदिर में ठाकुरजी का चन्दन वाघा का दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

समस्त सत्संगी हरिभक्तो के लिए सूचना

अपने सभी सत्संगियो को विशेष सूचना है कि अपने गाँव के प्राचीन घरो में प्राचीन नक्काशी युक्त दरवाजे, बारियाँ, या कमाट हो तो अपने स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में आवश्यकता है।

अपने परम पूज्य आचार्य महाराजश्री का संकल्प है। आप की ईच्छा हो तो सेवा से अथवा उसकी जो किम्मत हो उस अनुसार। आप दिये गये फोन नम्बर पर सम्पर्क करने की कृपा करे।

आज्ञा से

૯૦૯૯૦૯૮૯૬૯

Praful Khamani